बुद्ध पूर्णिमा व्रत कथा PDF

पौराणिक कथाओं के अनुसार कार्तिक नाम के एक नगर में चंद्रहाश नाम का एक राजा रहता था। उसी नगर में धनेश्वर नाम का एक ब्राह्मण रहता था, उसकी पत्नी बड़ी सुशील और रूपवती थी। घर में धन, धान्य आदि की कभी कमी नहीं रहती थी। लेकिन वह हमेशा संतान न होने के दर्द से परेशान रहता था।

एक बार एक योगी गाँव में आया और ब्राह्मण के घर को छोड़कर आसपास के सभी घरों से भिक्षा लेकर गंगा तट पर भोजन करने गया। अपनी भिक्षा के अनादर से दुखी धनेश्वर योगी के पास गए और इसका कारण पूछा।योगी ने कहा कि निःसंतान के घर का दान अपवित्र के भोजन के समान है, जो अशुद्ध के घर का भोजन करता है वह भी अशुद्ध हो जाता है। दलित होने के डर से उसने उस ब्राह्मण के घर से भीख नहीं ली।

यह सुनकर धनेश्वर बहुत दुखी हुए और उन्होंने योगी से संतान प्राप्ति का उपाय पूछा। योगी ने बताया कि आप मां चंडी की पूजा करते हैं, यह सुनकर वह देवी चंडी की पूजा करने के लिए वन में चले गए। ब्राह्मण की तपस्या से प्रसन्न होकर माता चंडी ने उन्हें दर्शन दिए और उन्हें पुत्र का वरदान दिया।उन्होंने कहा कि लगातार 32 पूर्णिमा का व्रत करने से आपको संतान की प्राप्ति होगी। इसी तरह उन्होंने लगातार 32 पूर्णिमा तक व्रत रखा और वैशाख पूर्णिमा के दिन उन्हें संतान की प्राप्ति हुई। इस प्रकार पूर्णिमा का व्रत करने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और विशेष फल की प्राप्ति होती है।

pdfinbox.com

pdfinbox.com